Publication: India Today Hindi
Date: 03/05/2020

लाइट्स, कैमरा, एक्शन ... ऑन करने में अभी लगेगा टाइम

देशभर में सिनेमा लगभग 14 हजार करोड़ रूपए का व्यवसाय करता है. लॉकडाउन से पहले इस साल हॉलीवुड और बॉलीवुड की तकरीबन 65 फिल्में रिलीज हुई जिससे 824 करोड़ रूपए का व्यवसाय हुआ है. लेकिन लॉकडाउन के बाद अब तक लगभग 600 करोड़ रूपए के नुकसान होने की बात कही जा रही है.

तीसरे फेज के लॉकडाउन में कुछ रियायतें दी गई हैं. लेकिन इससे फिल्म इंडस्ट्री को कोई राहत नहीं है. इसलिए स्टूडियो में लाइट्स, कैमरा, एक्शन ... सुनने के लिए अभी टाइम बाकी है.

सबकी निगाहें सरकार पर टिकी हैं कि किन शर्तों के साथ स्टूडियो को रोशन, मल्टीप्लेक्स और सिनेमाघरों को रंगीन करने का निर्देश मिलता है. इन शर्तों के साथ शूटिंग के लिए स्टार्स और प्रोड्यूसर्स कितने सक्षम होंगे, यह तो आने वाला समय बताएगा. फिलहाल तो फिल्ममेकर्स शूटिंग करने के लिए तैयार नहीं हैं.

इंडस्ट्री के लगभग 5 लाख स्टार्स और वर्कर्स की संस्था फेडरेशन ऑफ वेस्टर्न इंडिया सिने एम्प्लाइज (एफडब्ल्यूआईसीई) के प्रेसिडेंट बीएन तिवारी कहते हैं, 'फिल्म के प्रोड्यूसर हर स्थिति को समझ रहे हैं और शूटिंग शुरू करने की जल्दबाजी में नहीं हैं.

निर्माताओं की संस्था गिल्ड भी कहता है कि हम सौ फीसदी सुरक्षा में ही काम करेंगे, किसी आर्टिस्ट को खतरे में नहीं डाल सकते. क्योंकि, प्रोड्यूसर्स जानते हैं कि किसी वजह से एक भी सुपरस्टार बीमार पड़ गया तो इंडस्ट्री को बहुत बड़ा नुकसान होगा.'

इसके साथ ही तिवारी यह भी बताते हैं कि टीवी इंडस्ट्री के प्रोड्यूसर थोड़ी जल्दबाजी में हैं और वे जल्द से जल्द शूटिंग शुरू करना चाहते हैं.

लेकिन हम इसके लिए तैयार नहीं हैं. क्योंकि हम तब तक तकनीशियनों और मजदूरों को शूटिंग में शामिल होने नहीं देंगे जब तक उनकी जिंदगी की गारंटी न मिल जाए. इधर करण जौहर के धर्मा प्रॉडक्शन हाउस के प्रवक्ता का भी कहना है कि लॉकडाउन खुलने और प्रॉपर गाइडलाइन आने के बाद ही शूटिंग करने के बारे में कोई निर्णय लिया जाएगा.

Online Link - https://aajtak.intoday.in/story/corona-lockdown-film-industry-mumbai-ufo-1-1187148.html

कोरोना संकट के कारण धर्मा प्रॉडक्शन ने गुंजन सक्सेना की रिलीज के साथ ही मल्टीस्टारर फिल्म तख्त की शूटिंग भी टाल रखी है.

तख्त के अलावा संजय लीला भंसाली की गंगूबाई काठियावाड़ी, सलमान खान की राधे, शाहिद कपूर की जर्सी, वरूण धवन की कुली नंबर वन की रीमेक, भूल भुलैया-2, ब्रह्मास्त्र और थलाइवी जैसी महंगी फिल्मों की शूटिंग भी अधर में लटकी पड़ी है.

कोरोना के प्रकोप से बचने के लिए टीवी सीरियलों की शूटिंग के दौरान सोशल डिस्टेंसिंग का पालन तो किया जा सकता है. लेकिन फिल्मों की शूटिंग में यह पूरी तरह से संभव नहीं है. फिल्म निर्माण एक क्रिएटिव वर्क है. हीरो-हीरोइन के चुंबन और गले मिलने से लेकर अन्य दृश्यों के अलावा उन पर गानों के फिल्मांकन में सबसे बड़ी बाधा उत्पन्न होने वाली है. हालांकि, वैग्यानिक तकनीक वीएफएक्स के माध्यम से काफी हद तक इस समस्या को हल किया जा सकता है. बकौल तिवारी, 'हिंदी फिल्मों में 30 से 40 फीसद हिस्सा गानों का होता है.

और एक-एक गाने में 500-1000 डांसर्स काम करते हैं. एक्शन सीन में फाइटर्स काम करते हैं. उनको गाइडलाइन में बांधना मुश्किल भरा काम है. इसलिए प्रोड्यूसर्स इस बात से डरे हुए हैं कि अगर शूटिंग के दौरान कोई सुपरस्टार बीमार हो गया तो इंडस्ट्री को करोड़ों का नुकसान सहना पड़ेगा और दूसरे सुपरस्टार भी शूटिंग करने से घबराएंगे. ऐसे में इंडस्ट्री हर तरह से सुरक्षित होकर ही शूटिंग करने के बारे में तैयारी कर रही है. इसके लिए कुछ और महीने तक इंतजार करना पड़े तो कोई दिक्कत नहीं है.

आखिर जान है तो जहान है.' ऐक्टर अर्जुन कपूर भी मानते हैं कि एक प्रॉपर गाइडलाइन के साथ ही फिल्मों की शूटिंग शुरू करनी चाहिए. वैसे, फिल्म इंडस्ट्री यह मानकर चल रही है कि जुलाई से धीमी रफ्तार में फिल्मों की शूटिंग शुरू हो सकती है. लेकिन उससे पहले अधूरी फिल्मों को पूरी करने के लिए पोस्ट प्रोडक्शन का काम शुरू हो सकता है.

सिनेमा इंडस्ट्री के सामने चुनौती सिर्फ फिल्मों का निर्माण करने तक सीमित नहीं है. आखिरकार फिल्मों को तो आम दर्शकों के लिए बनाई जाती है. इसलिए उसे थिएटर तक पहुंचाना भी किसी चुनौती से कम नहीं है. प्रोड्यूसर और थिएटर के बीच महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में यूएफओ मूवीज प्रोड्यूसर की फिल्मों को सैटेलाइट के माध्यम से थिएटर तक पहुंचाने का काम करता है.

यूएफओ मूवीज के ज्वाइंट मैनेजिंग डाइरेक्टर कपिल अगरवाल का कहना है, 'हमें मल्टीप्लेक्स और सिंगल सिनेमाघरों में दर्शकों को हर तरह की सुरक्षा का विश्वास दिलाना होगा.

शुरुआत में छोटी फिल्में रिलीज होगी, जब दर्शकों का आना शुरू होगा तो बड़े स्टार की फिल्में रिलीज की जाएगी.' कपिल से सहमति जताते हुए आईनॉक्स लीजर लिमिटेड के सीईओ आलोक टंडन भी कहते हैं, 'दर्शकों का भरोसा जीतना हमारे लिए सबसे बड़ी चुनौती है.

हम सोशल मीडिया के जरिए दर्शकों को विश्वास दिलाएंगे कि आप निश्चिंत होकर सिनेमा देखने आ सकते हैं. जब कोई बड़ी फिल्म रिलीज होगी तो दर्शकों का आना शुरु होगा.' देश में 9500 स्कीन हैं. इसमें से 3500 मल्टीप्लेक्स हैं और 6000 सिंगल स्क्रीनवाले सिनेमाघर के साथ छोटे मल्टीप्लेक्स भी हैं.

लगभग 6000 से ज्यादा थिएटर में यूएफओ मूवीज सैटेलाइट के जरिए फिल्में रिलीज करने का काम करता है. मल्टीप्लेक्स में गाइडलाइन का पालन करना थोड़ा आसान है. लेकिन सिंगल स्क्रीनवाले सिनेमाघरों में परेशानी आएगी. क्योंकि, वहां के दर्शकों को तय गाइडलाइन के हिसाब से समझाना पड़ेगा.

देशभर में सिनेमा लगभग 14 हजार करोड़ रूपए का व्यवसाय करता है. लॉकडाउन से पहले इस साल हॉलीवुड और बॉलीवुड की तकरीबन 65 फिल्में रिलीज हुई जिससे 824 करोड़ रूपए का व्यवसाय हुआ है. लेकिन लॉकडाउन के बाद अब तक लगभग 600 करोड़ रूपए के नुकसान होने की बात कही जा रही है.

इस नुकसान की भरपाई मुश्किल है. इससे इंडस्ट्री की अर्थव्यवस्था चरमराई हुई है. इंडस्ट्री के सूत्रों का कहना है कि लॉकडाउन के दौरान जो फिल्में रिलीज नहीं हो पाई उनको इंश्युरेंस का भी फायदा नहीं मिलने वाला है. प्रोड्यूसर-ऐक्टर सुनील शेट्टी कहते हैं, 'फिल्ममेकर्स को सरकार मदद करे. टैक्स में छूट दे.'

प्रोड्यूसर्स फिल्म निर्माण के लिए कर्ज लेते हैं. उन्हें सूद देना पड़ता है. अब तक जिन फिल्मों की शूटिंग टल गई है उनके ऐक्टर्स की डेट्स के लिए भी प्रोड्यूसर्स को लंबा इंतजार करना पड़ेगा. शूटिंग के लिए जो महंगे सेट बनाए गए थे उसे तोड़कर ऐक्टर्स की डेट्स के हिसाब से फिर से तैयार कराने पड़ेंगे.

दूसरी इंडस्ट्री की तरह इस इंडस्ट्री में भी छंटनी का डर सता रहा है. यूएफओ मूवीज ने अपने 1305 लोगों को काम से निकाला नहीं है. लेकिन तिवारी के शब्दों में, 'इंडस्ट्री में दिहाड़ी तकनीशियन और मजदूर बड़ी संख्या में हैं. अगर उन्हें लंबे समय तक काम नहीं मिला तो इंडस्ट्री से मदद मिलने के बावजूद इनके पलायन का खतरा बना हुआ है.'